हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश

"चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 24 नवम्बर, 2021 को ग्राम पंचायत पंगी, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित **"कल्पा एवं पूह वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता"** परियोजना के तहत **"चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता"** विषय पर एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन पंचायत परिसर पंगी में किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत पंगी के 50 किसानों एवं कल्पा वन खंड के फ्रंट लाइन फील्ड स्टाफ ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ पवन राणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री मन मोहन सिंह, वन क्षेत्र अधिकारी, श्री मोहन सिंह, खंड अधिकारी, श्री शांता कुमार, वन रक्षक एवं पंचायत प्रधान श्रीमती कलजंग मणि भी उपस्थित रहे ।

डॉ स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने डॉ पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों, पंचायत प्रधानों एवं सभी प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में पधारने पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया । उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों में वानिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य कर रहा है। साथ ही साथ उन्होंने संस्थान में होने वाले शोध कार्यों एवं वर्तमान गतिविधियों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया । अपने संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने यह भी कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं

की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है जिससे न केवल वृक्षों को अत्याधिक क्षति पहुँच रही है अपितु प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ-2 पैदावार में भी कमी हो रही है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेँगे और लोग इससे होने वाले सभी प्रकार के लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जायेँगे । इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्याधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवायें भी प्राप्त होती रहेंगी ।

इसके उपरांत तकनीकी सत्र के दौरान डॉ स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा को 'चट्टानी पर्वत के विजेता' के नाम से भी जाना जाता है । यह किन्नौर जैसे नाज़ुक क्षेत्र की ढीली एवं नाज़ुक मिट्टी के कटाव को रोकने की अत्याधिक क्षमता रखता है । चिलगोजा प्रजाति के नष्ट होने से लोगों को आर्थिक नुकसान होगा अपितु यहाँ के लोगों को सामाजिक एवं पर्यावरणीय नुकसान भी होगा। उन्होंने 'चिलगोजा के संरक्षण एवं स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता' एवं 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को विस्तृत जानकारी दी तथा प्रतिभागियों से कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें । साथ ही साथ उन्होंने पंचायत प्रधानों एवं लोगों से अनुरोध भी किया कि वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे में बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश दें ताकि चिलगोजा के वृक्षों को कम क्षति पहुंचे एवं प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़ सकें ।

डॉ. पवन राणा (वरिष्ठ वैज्ञानिक), हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'कीटों और रोगाणुओं से चिलगोजा का बचाव' विषय पर जानकारी देते हुए कहा कि कीटों की बहुत सारी प्रजातियां मुख्यतः *Dioryctria abietella* एवं *Plodia interpunctella* चिलगोजा के शंकुओं एवं बीजों को अत्याधिक नुकसान पहुंचाती है तथा इनके नुकसान से चिलगोजा को बचाने के लिए इनके संक्रमित छाल, शाखाओं एवं शंकुओं को काट कर जला देना चाहिए ताकि यह इन्हें और नुकसान न पहुंचा पायें । उन्होने लोगों को अवगत करवाया कि चिलगोजा के कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन के लिए संस्थान ने प्रभावी नियंत्रण उपाय विकसित कर लिया है जो कीटों और रोगाणुओं के प्रबंधन में कारगर हैं । लाइट एवं फ़ीरोमोन्स ट्रेप शंकुओं में लगने वाले कीटों एवं जैव कीटनाशक जैसे कि नीम बीजों में लगने वाले कीटों के प्रबंधन में प्रभावी हैं।

श्री मन मोहन सिंह (वन परिक्षेत्र अधिकारी), ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को "चिलगोजा के नर्सरी तकनीक एवं रोपण" एवं 'चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवत्ता के पौधों के चयन की आवश्यकता' के बारे में वृस्तृत जानकारी दी । उन्होंने लोगो को बताया की चिलगोजा किन्नौर के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है तथा वर्तमान में बहुत से मानवजनित खतरों के कारण यह भविष्य में विलुप्त हो सकता है । इसलिए वन विभाग एवं स्थानीय लोगों साथ में मिलकर चिलगोजा का पौध रोपण करना होगा ताकि चिलगोजा के नये जंगल तैयार हो पायें । उन्होने यह भी आग्रह किया कि यदि वनों में अच्छी गुणवत्ता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को अवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पौधों की नर्सरी तैयार कर सकें । जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानों को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएँ भी उनके समक्ष रखी एवं उन्होंने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

श्री मोहन सिंह (खंड अधिकारी) ने अपने व्याख्यान में किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होने स्थानीय बोली में ***'शी मा ली री ग्यामिगसा शांग माँ ली री ग्यामिगसा'*** अर्थात चिलगोजा जन्म, मरण, शादी-ब्याह, त्योहारों इत्यादि के लिए अति आवश्यक है । इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में चिलगोजा की भारी कमी के कारण शादी-ब्याह में चिलगोजा की मालाओं के स्थान पर खातग पहनाया जा रहा है जोकि चिलगोजा की पैदावार की लगातार गिरावट एवं हमारे पारंपरिक संस्कृति के विलुप्त होने का संकेत है । साथ ही साथ उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे शवों को जलाने के लिए चिलगोजा की लकड़ी न काटें।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए पंचायत प्रधान श्रीमती कलजंग मणि ने संस्थान के प्रयास की सराहना की और कहा चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए जो पहल हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने की है उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि चिलगोजा के संरक्षण के लिए वे आगामी चिलगोजा ओकशन के लिए होने वाले ग्राम सभा की बैठक में सभी ग्राम वासियों को चिलगोजा की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता के बारे बताएँगे तथा साथ ही साथ ठेकेदारों को सतत कटाई एवं 5-10 शंकुओं को वृक्षों पर छोड़ने के निर्देश देंगे ताकी प्राकृतिक पुनर्जनन बढ़े । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

अजय कुमार, कनिष्ठ परियोजना अध्येता एवं कुमारी ईशानी, परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को तोड़ने की विधि' के बारे में फील्ड डेमोन्सट्रेशन के माध्यम से बताया । इसी दौरान पाँच मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर भी पंचायतों को प्रदान किये गये ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित कल्पा वन परिक्षेत्र के अधिकारियों तथा किसानों- बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने

के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

चिलगोजा के संरक्षण और
स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता
पर
एक दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम
24 नवम्बर, 2021
ग्राम पंचायत पांगी, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश
NABARD